Course - 1
Unit - 5

Q. बालक / छात्र से आप क्या समझते है ? छात्र के पहचान के निर्धारक कौन-कौन से है ?

Identity का क्या महत्व है

Ans Introduction :-

आधुनिक युग बालकेन्द्रित शिक्षा का युग है। ऐसे मे छात्रों की व्यक्तिगत पहचान अत्यंत आवश्यक है। वैसे तो वैदिक काल से ही छात्रों की पहचान उसके वर्ग के आधार पर या समूह के आधार पर की गई है परंतु वर्तमान युग मे छात्रों की पहचान विभिन्न निर्धारको के आधार पर की जाने लगी है ताकि छात्रों को सामान्य शिक्षा, समय के आधार पर शिक्षा, बालक की रुचि, आवश्यकता एवं व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर शिक्षा दी जा सके।

संसार मे कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते है। यह एक प्राकृतिक सच्चाई है तथा इन भिन्नताओं के कारण बालकों की शैक्षणिक क्षमता, बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा आदि विभिन्न क्षेत्रों मे भिन्नता पायी जाती है। ऐसी अवस्था मे छात्रों की व्यक्तिगत पहचान ही उसके व्यक्तिगत शिक्षा के मार्ग को प्रशस्त करती है।

Meaning of student individuality :-

छात्रों की व्यक्तिगत पहचान से तात्पर्य छात्रों की निजी व्यक्तित्व जिसके कारण एक बालक

दूसरे बालक से भिन्न होता है या उसकी अपनी अलग पहचान होती है। दूसरे शब्दों में वह गुण चाहे व्यक्तिगत गुण हो या सामाजिक गुण वे बालकों को एक-दूसरे से अलग पहचान बनाते हैं जो Identity कहलाती है।

Identity formation:- (पहचान का निर्माण)

प्रत्येक बालक समाज में मात्र एक प्राणी के रूप में जन्म लेता है। जिस परिवार में वह जन्म लेता है, उसकी पहली पहचान उस परिवार के सदस्य के रूप में होती है। उसी तरह दूसरी पहचान आयु वर्ग से होती है। फिर उसके बाद वह अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर इस बात की पुष्टि करता है कि वह मनो-शारीरिक रूप से वह कितना स्वस्थ्य है। फिर वह विद्यालय, समाज एवं अन्य तथ्यों के संपर्क में आता है। जहाँ उसे अलग-अलग रूपों में चिन्हित किया जाता है। बालक का यही प्रारूप जिसके द्वारा उसे चिन्हित किया जाता है, उसकी Identity कहलाती है।

पहचान निर्धारण करने वाले निर्धारक :-

बालक के पहचान को निर्धारित करने वाले अनेको निर्धारक हैं। जो केवल उसकी पहचान होती है। यह उसकी पहचान को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण निर्धारक की भूमिका अदा करते हैं।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(1.) Individual identity
(i) Sex (ii) Age (iii) Intelligent (iv) Personality
(V) Special Need.

(2.) Social catogary
(i) cast (ii) class (iii) Religion (iv) Language
(V) Peer group

1. Individual identity :-
(i) Sex (लिंग) :- प्रत्येक मनुष्य व्यक्ति बालक या बालिका के रूप में जन्म लेता है। जिससे उसकी पहचान होती है।
(ii) आयु के आधार पर भी पहचान की जाती है। जैसे → दो साल, चार साल।
(iii) बुद्धि के आधार पर भी खुद की पहचान होती है।

(iv) व्यक्तित्व (Personality) :-
हर मनुष्य का अपना व्यक्तित्व होता है जिसके आधार पर वह अपने को वातावरण में स्थापित करता है।
(V) विशेष आवश्यकता (Special Need) :-
मनुष्य ऐसे भी होते है जिनकी शारीरिक या मानसिक स्थिति सामान्य नहीं होती है। इसके लिए उनकी पहचान ही अपनी होती है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

2 Social category :→

ये बालक के पहचान को निर्धारित करने वाले प्रमुख तत्व है।

(i) Cast (वर्ण) समुदाय :→

हर समुदाय की अपनी कुछ अलग विशेषता होती है जो बालक पर साफ दिखाई देता है। जो बालक पर स्पष्ट दिखाई देता है, जिस आधार पर उनको पहचाना जा सकता है।

(ii) class (वर्ग)

इसके आधार पर आर्थिक स्तर पर मनुष्य को समझा जाता है। जैसे → उच्च वर्ग मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग आदि।

(iii) Religion (धर्म)

दुनिया में जीतने भी लोग जन्म लेते है वे किसी-न-किसी धर्म के अन्तर्गत जन्म लेते है। जिस रूप में उनको पहचान मिलता है और उसी प्रकार की शिक्षा उन्हें दी जाती है।

(iv) Language (भाषा)

हम किस क्षेत्र, धर्म, जाति आदि की पहचान भाषा से भी की जाती है। भाषा के द्वारा से स्थान का भी पता लगाता है।

Scanned with CamScanner

(V) Peer group (एक जैसा समूह)
जैसे → खेल समूह, छात्र समूह, शिक्षकों का समूह।

The Importence of lerners identify

बाल केन्द्रित शिक्षा तभी संभव हो सकती है, जब बालक को व्यक्तिगत रूप से पहचाना जाय। बालकों के पहचान के आधार पर उनके लिए पाठ्यक्रम, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण विधियों का चयन किया जा सकता है। स्पष्ट! कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा में बालक की व्यक्तिगत पहचान अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

Scanned with CamScanner